दशम् अध्याय

उपसंहार

उपलब्धि

मूल्यांकन

निष्कर्ष

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

दशम् अध्याय

उपसंहार

हिन्दी उपन्यास अपने प्रारम्भिक उपेक्षित युग से निरन्तर प्रगति करता हुआ आज हिन्दी साहित्य की एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण विधा के रूप में हमारे सामने है, जो अपनी अभिव्यक्त शैली, घटना प्रधानता, विभिन्न मानवीय समस्याओं के चित्रण आदि विशेषताएँ अन्तर्निहित किये हुए है। प्रारम्भिक धारणा के विपरीत आज वह मनोरंजन के अतिरिक्त सम्पूर्ण मानव की अनुभूति कराने में सक्षम है। मानव की बाह्य प्रवृत्तियाँ ही नहीं वरन् आन्तरिक प्रवृत्तियाँ भी आज उपन्यास में दृष्टिगोचर हो रही हैं। नित–नूतन प्रयोग से उपन्यास साहित्य अपने चरम उत्कर्ष में पहुँच चुका है।

हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यासों का शिल्प अनगढ़ था। कथानक की दृष्टि से घटना का, चरित्र–चित्रण की दृष्टि से पात्रों की वाह्यावृत्ति का, वातावरण के नाम पर प्रकृति चित्रण और उद्देश्य के नाम पर उपदेशात्मक मनोरंजन परिलक्षित होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में यथार्थ सामाजिक परिस्थितियों एवं व्यक्ति की मनःस्थितियों को चित्रित किया। उनके युग में हिन्दी उपन्यास ने सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को स्पर्श करते हुए आम आदमी की भाषा–बोली को गले लगाया। प्रेमचन्दोत्तर युग में कथा का ह्रास हुआ और मनोविश्लेषण बढ़ा, जिसके कारण चरित्र–चित्रण में गहराई आई। साधारण के स्थान पर असाधारण, शरीर प्रधान के स्थान पर मानस–प्रधान, क्रियारत के स्थान पर चिन्तनरत, सरल के स्थान पर जटिल, स्पष्ट के स्थान पर रहस्यमय पात्र सामने आए। चरित्र–चित्रण स्थूलता से सूक्ष्मता, गतिहीनता से गतिशीलता और सामाजिक चेतना से व्यक्ति चेतना की ओर उन्मुख हुआ। व्यक्तिवादी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक शिल्पविधि तथा मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक शिल्पविधि अपनाई गई।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

स्वातंत्र्योत्तर युग में उपन्यासों के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रान्ति आई, इस युग में सामाजिक, आँचलिक, मनोविश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आदि उपन्यासों का विकास हुआ। उपन्यासों के अनुसार ही उनमें शिल्पविधि में भी भिन्नता आई। आँचलिक उपन्यासों में आँचलिक शिल्पविधि, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक शिल्पविधि एवं ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक शिल्पविधि अपनायी गई। स्वातंत्र्योत्तर युग में जितने भी उपन्यास सामने आये उनमें शिल्पविधि की दृष्टि से अभिनव प्रयोग हुए हैं। यथार्थवाद इस युग का आधार बन गया। इस युग में ऐतिहासिक व आँचलिक उपन्यासों का पूर्णतः विकास हुआ, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। युगीन ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक शिल्पविधि, आँचलिक उपन्यासों में आँचलिक शिल्पविधि व मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक शिल्पविधि के दर्शन होते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासों में आँचलिकता और मनोवैज्ञानिकता ने उपन्यासों को एक नवीन दिशा प्रदान की। आँचलिक उपन्यास जहाँ किसी अंचल विशेष की संस्कृति, जीवन निर्वाह, खान–पान, रहन–सहन एवं विभिन्न समस्याओं आदि से सम्बन्धित थे, वहीं मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों ने मानव मन की सूक्ष्म प्रवृत्तियों को उद्‌घाटित करने का कार्य किया। क्योंकि मनोविश्लेषण मानव मन के असामान्य व्यवहार के कारणों की खोज करता है। इन उपन्यासों में पाश्चात्य मनोविश्लेषकों – फ्रायड, एडलर व युंग का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। उपन्यासकारों ने मनोविश्लेषण के प्रभाव स्वरूप व्यक्ति के वाह्य रूप व कार्य–व्यापारों को महत्व न देकर उसके मन की आन्तरिक स्थितियों का विवेचन किया और विभिन्न प्रकार की मनोग्रन्थियों के विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया।

हिन्दी उपन्यासें में मनोविज्ञान का प्रवेश यद्यपि प्रेमचन्द के उपन्यासों से ही हो गया था, उन्होंने मानव चरित्रों के उद्‌घाटन में मनोविज्ञान का सहारा लिया है, लेकिन मनोविज्ञान का सूक्ष्म व सही अर्थ में प्रयोग जैनेन्द्र के उपन्यासों से ही हुआ। उन्होंने व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द्व को अपने उपन्यासों का मूल आधार

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

बनाया। उनकी रचनाओं में मनोविज्ञान के व्यावहारिक रूप के दर्शन होते हैं। जैनेन्द्र के बाद इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में मनोविज्ञान का समावेश किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में सैद्धान्तिक स्तर पर मनोविज्ञान का प्रयोग किया। अन्य उपन्यासकारों में अज्ञेय, डॉ. देवराज, भगवती प्रसाद बाजपेयी, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भारत–भूषण अग्रवाल आदि अनेक लेखकों ने मनोवैज्ञानिक उपन्यास लेखक में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इलाचन्द्र जोशी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखनी चलायी, लेकिन उन्हें अत्यधिक ख्याति एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकार एवं कहानीकार के रूप में मिली। उन्होंने 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'त्याग का भोग', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र', 'भूत का भविष्य', और 'कवि की प्रेयसी' कुल बारह उपन्यास लिखे। उन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। कुछ उपन्यासों में समाज चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। व्यक्ति चित्रण के माध्यम से सामाजिक जीवन को चित्रित करने वाले उपन्यासों में 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'निर्वासित', 'प्रेत और छाया', 'ऋतुचक्र' व 'भूत का भविष्य' तथा समाज जीवन का चित्रण करने वाले उपन्यासों में 'त्याग का भोग', 'मुक्तिपथ' तथा 'जहाज का पंछी' आते हैं। ऐतिहासिक कथानक के अन्तर्गत 'कवि की प्रेयसी' को रखा जा सकता है।

व्यक्तिवादी कथानकों में व्यक्ति विशेष की जीवनाभूतियों, स्मृतियों एवं कल्पनाओं को कथा का आधार बनाया गया है। एक व्यक्ति के चारों ओर सारी कथा घूमती है। व्यक्ति अपनी कथा को स्वयं पाठकों के सामने प्रस्तुत करके उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। इनमें व्यक्ति की एकान्तिकता पर निर्मम प्रहार किया गया है। 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी' व 'प्रेत और छाया' चारों उपन्यासों में व्यक्ति के अहं पर करारी चोट की गई है। इन

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक प्रसंगों की भरमार है, जिनको पढ़ते ही पाठक पात्र की जीवनगत विभिन्न बातों को जानने के लिए उत्सुक होता है, कहीं–कहीं मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति इतनी अधिक बढ़ गई है कि उसमें कथा का प्रवाह रूक सा जाता है और कथातत्व गौण हो जाता है, सर्वत्र मनोविश्लेषण ही मनोविश्लेषण दिखाई देता है।

समाजिक कथानकों में 'निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'त्याग का भोग', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र' तथा 'भूत का भविष्य' हैं। इनमें कथानक संगठित, रोचक और आकर्षक बन पड़ा है। चाहे कथानक का प्रारम्भ हो, कथानक का मध्य हो या कथानक का अन्त हो सारा का सारा सुनिश्चित तथा सुगठित है। इन उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'निर्वासित' में समाज की प्रताड़ना, द्वितीय महायुद्ध के सामाजिक जीवन का चित्रण तथा द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद अणुबम के अविष्कार और तृतीय महायुद्ध के आभास की कथा का वर्णन किया गया है। 'मुक्तिपथ' उपन्यास में बेरोजगारी, विधवा समस्या एवं जीवन की अन्य विविध समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'सुबह के भूले' में निम्नवर्ग अर्थात गरीबी एवं उच्चवर्ग अर्थात अमीरों की विभिन्न मनोवृत्तियों का सुन्दर एवं स्पष्ट चित्रण किया गया है। उपन्यास में धनी वर्ग व सिनेमा समाज के दिखावे की प्रवृत्ति, ढौंग, चापलूसी तथा दुश्चरित्रता आदि की प्रधानता है, लेकिन उसी समाज में कहीं–कहीं हेमकुमार जैसा सहृदय एवं कुलीन पात्र भी है। 'त्याग का भोग' में एक ओर रंजन व मनिया की कथा है तो दूसरी ओर वीरेन्द्र और शोभना की। दोनों कथानकों को कथाकार ने एक–दूसरे में गुम्फित कर दिया है। एक ओर रंजन का व्यक्तिवादी रोमांसयुक्त रूप है, दूसरी ओर शोभना व्यक्तवादी उच्छंखल जीवन बिताना चाहती है। उपन्यास का कथानक कथा में आये अनेक हिप्नोटिज्म के प्रसंगों से प्रभावित होता है। कहीं–कहीं तो ये कथाविकास में सहायक हुए हैं, लेकिन कहीं इनका लम्बा स्वरूप कथानक को उबाऊ बना देता है। 'जहाज का पंछी में छोटी–छोटी अनेक घटनाएँ हैं, जो व्यक्ति विशेष के जीवन को प्रभावित

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

करती हैं। ऐसा लगता है उपन्यास का नायक विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण कर रहा हो। उपन्यास में सभी घटनाएँ छोटी हैं, लेकिन मर्मस्पर्शी व ज्ञानवर्धक हैं। 'ऋतुचक्र' उपन्यास में पहाड़ी परिवेश का सुन्दर चित्रण किया गया है। 'भूत का भविष्य' में सामाजिक वर्ग–भेद का चित्रण किया गया है। भूतनाथ के माध्यम से उच्चवर्ग द्वारा हरिजनों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया गया है। इलाचन्द्र जोशी का अन्तिम उपन्यास 'कवि की प्रेयसी' की कथा ऐतिहासिक है। लेखक ने कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम' के प्रस्तावना भाग के संवाद सूत्र में वर्णित उपेक्षित कवि सौमिल्लिक को नायक बनाकर आत्मकथात्मक शैली में यह कल्पनाप्रधान प्राचीन कालीन उपन्यास लिखा है। प्रकारांतर से युग का परिचय देते हुए सोमिल के द्वारा परिवार, नगर, गुरूकुल यात्रा आदि का वर्णन कथा को ऐतिहासिकता का आभास देने के लिए समर्थ है।

इलाचन्द्र जोशी के सभी उपन्यास चरित्र–प्रधान हैं। चरित्रों के उद्घाटन के लिए इन्होंने विभिन्न प्रकार के पात्रों को चुना है। समाज में रहते हुए समाजगत व व्यक्तिगत विभिन्न समस्याओं, विषमताओं एवं दुरूहताओं से लेखक का जैसा साक्षात्कार होता है, उपन्यासकार उसी आधार पर अपने पात्रों का स्वरूप निर्धारण करता है। चरित्र–चित्रण के लिए पात्रों के स्वतंत्र और निजी विचारों को बल दिया है। इनके पात्र विभिन्न मानसिक कुण्ठाओं से ग्रस्त हैं। इन्होंने अपने पात्रों का चयन सामान्य प्राणी जगत से न कर अस्वस्थ्य एवं दुर्बलचित्त प्राणियों से किए हैं, जो कुण्ठाग्रस्त होने के कारण विभिन्न मनोविकारों से जकड़े हुए हैं और असाधारण व असामान्य व्यवहार करते हैं। पात्रों के इन्हीं असाधारण प्रवृत्तियों का विशद् विवेचन विभिन्न मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं द्वारा किया है। चरित्र–चित्रण के लिए इन्होंने दो प्रणालियाँ अपनायी हैं– प्रत्यक्ष प्रणाली और अप्रत्यक्ष प्रणाली। प्रत्यक्ष प्रणाली के अन्तर्गत इन्होंने पात्रों का चरित्र–चित्रण विभिन्न विधियों के माध्यम से स्वयं किया है। अप्रत्यक्ष या परोक्ष प्रणाली में पात्रों के क्रिया–कलाप, वार्तालाप, डायरी एवं आत्मविश्लेषण द्वारा चरित्र–चित्रण किया है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकार होने के कारण इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में मनोविश्लेषण प्रधान वातावरण का प्रयोग किया है। वातावरण सृजन के लिए उन्होंने वाह्य एवं आन्तरिक दोनों रूपों का सहारा लिया है। आन्तरिक रूप से वातावरण सृजन में पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है। वाह्य वातावरण सृजन में प्राकृतिक चित्रण एवं सामाजिक चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है। प्राकृतिक चित्रण में प्रकृति के विभिन्न प्रतिरूपों, प्राकृतिक दृश्यों, प्रातः मध्याह्न, सन्ध्या, रात्रि एवं विभिन्न ऋतुओं आदि के चित्रण द्वारा वातावरण का सृजन किया गया है। सामाजिक वातावरण का प्रयोग इलाचन्द्र जोशी ने पात्रों के चरित्र को प्रकट करने, कथावस्तु को प्रभावशाली बनाने एवं मानव जीवन के मनोविश्लेषण करने में किया है। इसके अन्तर्गत समाज के सदस्यों की वेशभूषा, भाषा, रीति–रिवाज, संस्कृति, व्यापार, राजनैतिक चेतना, नारी–पुरूष सम्बन्ध, सामाजिक प्रथाओं, विसंगतियों आदि का चित्रण किया गया है।

इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में भाषा के विविध गुणों का समावेश किया है। पात्रानुकूल व सारगर्भित भाषा इनके उपन्यासों का प्रमुख गुण है। भाषा में साहित्यिक खड़ी–बोली का प्रयोग किया गया है, जो संस्कृतयुक्त है। इन्होंने अपनी भाषा में उचित प्रवाह व गति का ध्यान रखा है। पात्रों के जीवन की विविध समस्याओं एवं आन्तरिक प्रवृत्तियों के चित्रण में दार्शनिक भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों के कल्पनाजगत का चित्रण करने के लिए जोशी जी ने तत्सम् शब्दावली युक्त भाषा का प्रयोग किया है। मनोविश्लेषण के लिए विभिन्न वैज्ञानिक शब्दों व उपमाओं का सहारा लिया है। इसके अतिरिक्त पात्रों के गहन व्यक्तित्व के उद्घाटन व उनके विचारों भावों व अनुभूतियों में सजीवता लाने के लिए समसामयिकता, व्यक्तिवादी चेतना, अन्तर्द्वन्दता आदि गुणों को अपनी भाषा में सम्मिलित किया है। शैलियों में मनोविश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, आत्मकथात्मक एवं चित्रात्मक शैलियों का प्रयोग किया है। व्यक्ति की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों अहंवाद, कामकुण्ठा, प्रतिहिंसा, स्वार्थपरता, घृणा आदि की

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भावना के सूक्ष्म अंकन एवं उनका विश्लेषण करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। जहाँ नायक–नायिका अथवा कोई पात्र अपनी कहानी को पाठकों के सम्मुख रखता है। किसी पात्र या घटना का वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों एवं स्वभाव की विचित्रता का सजीव चित्र खींचने के लिए चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन का विश्लेषण करना रहा है। विश्लेषण के साथ–साथ उसमें संश्लेषण की प्रवृत्ति भी विद्यमान है। उन्होंने वाह्य परिस्थितियों को अधिक महत्व न देकर व्यक्ति की आन्तरिक समस्याओं का गहन विवेचन किया है। व्यक्ति के अन्दर स्थित दमित वासनाओं, कुण्ठाओं, विभिन्न पशु–प्रवृत्तियों, हीनता ग्रन्थि और अहंता का चित्रण उनके उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है। व्यक्तिगत चित्रण द्वारा समाज कल्याण व राष्ट्र कल्याण का प्रयास इलाचन्द्र जोशी ने किया है।

संश्लेषण की प्रवृत्ति उनके सभी उपन्यासों में पायी जाती है, जो उनको अन्य उपन्यासकारों से पृथक करती है। उन्होंने व्यक्ति के अवचेतन मन में उठने वाले विकारों और मनोभावों का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए उनके अन्दर के अहंभाव को चित्रित करने का प्रयास किया है, जो समाज की प्रगति में बाधक है। वे व्यक्ति के अन्दर की दमित प्रवृत्तियों को दबाने के पक्ष में नहीं हैं क्योंकि ये दमित प्रवृत्तियाँ व्यक्ति और समाज के विकास में बाधक होती हैं। वे इन प्रवृत्तियों का संश्लेषण करना चाहते हैं, जिससे व्यक्ति कलह, चिन्ता आदि में न पड़कर अपना कल्याण कर सकेगा। मानव के अवचेतन भाग की विभिन्न ग्रन्थियाँ समय–समय पर उद्दाम वेग से बाहर प्रस्फुटित होने का प्रयास करती है। व्यक्ति के असामान्य व्यवहार का कारण ये प्रवृत्तियाँ ही हैं। इलाचन्द्र जोशी ने इन्हीं कारणों को खोजकर उनका विश्लेषण करने के साथ–साथ संश्लेषण भी किया है। 'लज्जा' उपन्यास की लज्जा अन्त में अपने कार्य पर पछताती है। 'संन्यासी' में नन्दकिशोर अपनी दुष्प्रवृत्ति के कारण संन्यासी बन जाता है और

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जेल की हवा भी खाता है। 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ अन्त में सही मार्ग पर लौट आता है। 'त्याग का भोग' में नृपेन्द्ररंजन अपने कुकृत्य के लिए मनिया से क्षमा माँगता है। इसी प्रकार संश्लेषण की यह प्रवृत्ति किसी–न–किसी रूप में प्रत्येक उपन्यास में दृष्टिगोचर होती है।

इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति की कुण्ठा, अहंता, हीनता, व्यक्तिवादिता, हताशा, कामवृत्ति आदि विभिन्न प्रवृत्तियों को उजागर किया है। 'लज्जा' से लेकर 'भूत का भविष्य' तक सभी उपन्यास इन्हीं प्रवृत्तियों को उजागर करते हैं। व्यक्ति के अचेतन में उठने वाले विचार व्यक्ति और समाज दोनों के लिए घातक सिद्ध होते हैं। आज का अहंवादी मानव अपनी विभिन्न असफलताओं के कारण कुण्ठित हो रहा है। "इस प्रकार कुण्ठित व्यक्ति बाहरी परिस्थितियों की विषमता से लड़कर उन पर विजय प्राप्त करके, व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन की गति को आगे बढ़ाते चले जाने में सहायक होने के बजाय अपनी ही दमित प्रवृत्तियों से लड़ने में अपनी सारी शक्तियों को समाप्त कर देता है और संघर्ष में उलझकर स्वयं ही क्षत–विक्षत होता चला जाता है। यह एक ऐसा विकट अभिशाप है, आज के युग का, जिसका बहुत बड़ा हाथ सामुहिक प्रगति को रोकने में है।"[1] अपनी इसी कुण्ठा के कारण वह आत्मविनाश की ओर उन्मुख हो रहा है। इलाचन्द्र जोशी ने इस अहंवादी रूप का चित्रण पर्दे की रानी, में किया है। इन्द्रमोहन निरंजना को पाने में असफल होने पर अपनी पत्नी शीला की हत्या कर निरंजना के कौमार्य को खण्डित तो करता ही है साथ ही अपनी आत्महत्या भी करता है।

इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद के दर्शन होते हैं। व्यक्तियों के अन्तर्मन की विभिन्न प्रवृत्तियों के उद्‌घाटन एवं उनके विश्लेषण तथा अहंभावना पर प्रहार कर उसे सामाजिकता प्रदान करने के लिए उन्होंने मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का आधार लिया है। जीवन के यथार्थ परिवेश से चुनने

---

1 'नए विचार : नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 43

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

के कारण उन्होंने विभिन्न दुर्बल पात्रों का सृजन किया है। यही उनके उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है। साथ ही उन्होंने अपने नारी पात्रों को भी सशक्त, धैर्यवान व साहसी बनाया है। वे केवल पुरूषों के हाथ की कठपुतलियाँ न होकर स्वतंत्र रूप से रहकर अपने विचार प्रकट कर सकती हैं। इस सम्बन्ध में वे 'विवेचना' में लिखते हैं– "धीरे–धीरे वर्तमान युग की बुद्धिवादी नारी का दृष्टिकोण, यथार्थता ही बनता जा रहा है। अर्थात वे शरत युग की नारी की तरह भावुकता के फेर में पड़कर अहंवादी पुरूष की इच्छा के बहाव में अपने को पूर्णतया बहाना और मिटाना पंसद नहीं करती, बल्कि स्थिति की वास्तविकता को समझकर व्यक्ति और समाज के अत्याचारों का सामना पूरी शक्ति से करने योग्य अपने को बनाने की चेष्टा में जुट रही है। सामाजिक पर्दे के भीतर ये इसी सत्य का उद्‌घाटन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में करने का प्रयास मैंने किया है।"[1]

इलाचन्द्र जोशी के सभी उपन्यासों में युगचेतना का स्वर मुखर हुआ है। 'मुक्तिपथ' और 'जहाज का पंछी' में तो युगीन यथार्थ का चित्रण किया गया है। 'मुक्तिपथ' में विभाजन के पश्चात् भारत की राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक दशा का सफल चित्रण किया गया है। उमाप्रसाद जी के रूप में भारतीय अफसरों की कहानी, राजीव के रूप में बेकार युवकों की दशा तथा सुनन्दा भारतीय विधवाओं की दारूण कथा को प्रस्तुत करती है। आज समाज में विभिन्न वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद एक व्यक्ति की विविध उपलब्धियों के बावजूद एक व्यक्ति की विविध समस्याओं एवं विवशताओं के अंकन द्वारा युगीन समाज का चित्रण 'जहाज का पंछी' में किया है। आज के बदलते समाज में साहित्यकार अपनी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि द्वारा बदलते हुए युग की बदलती हुई चेतना का साक्षात्कार कर उसे अपने साहित्य में मूर्त रूप प्रदान करता है। जोशी जी की कृतियों में भी इस परिवर्तित युगचेतना के दर्शन होते हैं। 'जहाज का पंछी' में उन्होंने दिखाया है कि आज का मानव शोषण को जगाने का काम करेगा। इसमें

---

1 'विवेचना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 124

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

समाज में बढ़ रहे दुराचार, भ्रष्टाचार आदि को रोकने के लिए नवोत्साह से पूर्ण नवयुवकों की आवश्यकता पर जोर दिया है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परम्परा में जैनेन्द्र, अज्ञेय, देवराज उपाध्याय, भगवतीचरण वर्मा आदि उपन्यासकारों के सन्दर्भ में इलाचन्द्र जोशी जी कहीं भी पीछे नहीं हैं। उनका सृजन हर दृष्टि से श्रेष्ठ है। उनका सैद्धान्तिक मनोविश्लेषणवाद सामाजिक दृष्टि से निकृष्ट चरित्रों का निर्वाचन, कथा–विधान की शैली, उत्कृष्ट भाषा उन्हें मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों की श्रेणी में उत्कृष्ट स्थान दिलाने में सक्षम है।

इस प्रकार इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों के शिल्प के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों में इलाचन्द्र जोशी का अपना अलग स्थान है। अपने कथा साहित्य में समाज के व्यथित वर्ग की गाथा लिखने की एक नई परम्परा की शुरूआत उन्होंने की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की विशेष उपाधि प्रदान समारोह में 26 जून 1979 को प्रख्यात समीक्षक व विद्वान डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने अपने भाषण में कहा– "उन्होंने अपने को जीवनी के भीतरी यथार्थ से सम्बद्ध रखा है। हिन्दी साहित्य के लिए उनकी यह एक बहुत बड़ी देन है। उन्होंने अपनी प्रौढ़ कृतियों द्वारा हिन्दी साहित्य को एक सार्वभौम वैचारिक स्तर पर लाकर स्थिर कर दिया.....प्रेमचन्द की सूक्ष्म दृष्टि के स्थान पर इलाचन्द्र जी ने जो सूक्ष्म दृष्टि ग्रहण की उसी का प्रतिपालन सामाजिक कथा साहित्य में हुआ है। इसीलिए सामाजिक कथा साहित्य की इस प्रवृत्ति के सूरज इलाचन्द्र जोशी के साहित्य में खोजे जा सकते हैं। इस प्रकार हिन्दी कथा–साहित्य को एक नयी शिक्षा प्रदान करने और एक नयी परम्परा स्थापित करने, इन दोनों ही दृष्टियों से इलाचन्द्र जोशी जी का हिन्दी साहित्य को योगदान अभूतपूर्व और अभिनन्दनीय है।"[1]

---

1 'राष्ट्र भाषा सन्देश' : 15 जुलाई 1979, पृष्ठ – 9

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/